Ministry of Culture
Government of India

कला यस्मिन् प्रतिष्ठिताः
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS

लखनऊ विश्वविद्यालय
University of Lucknow
(Accredited A++ by NAAC)

चलायमान प्रदर्शनी "ग्लोरियस भीमबेटका: पद्मश्री डॉ. यशोधर मठपाल संग्रह"(12–31 मार्च, 2024)

संस्कृति मंत्रालय
भारत सरकार
सत्यमेव जयते

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS

लखनऊ विश्वविद्यालय
University of Lucknow

आदि दृश्य विभाग

'ग्लोरियस भीमबेटका'

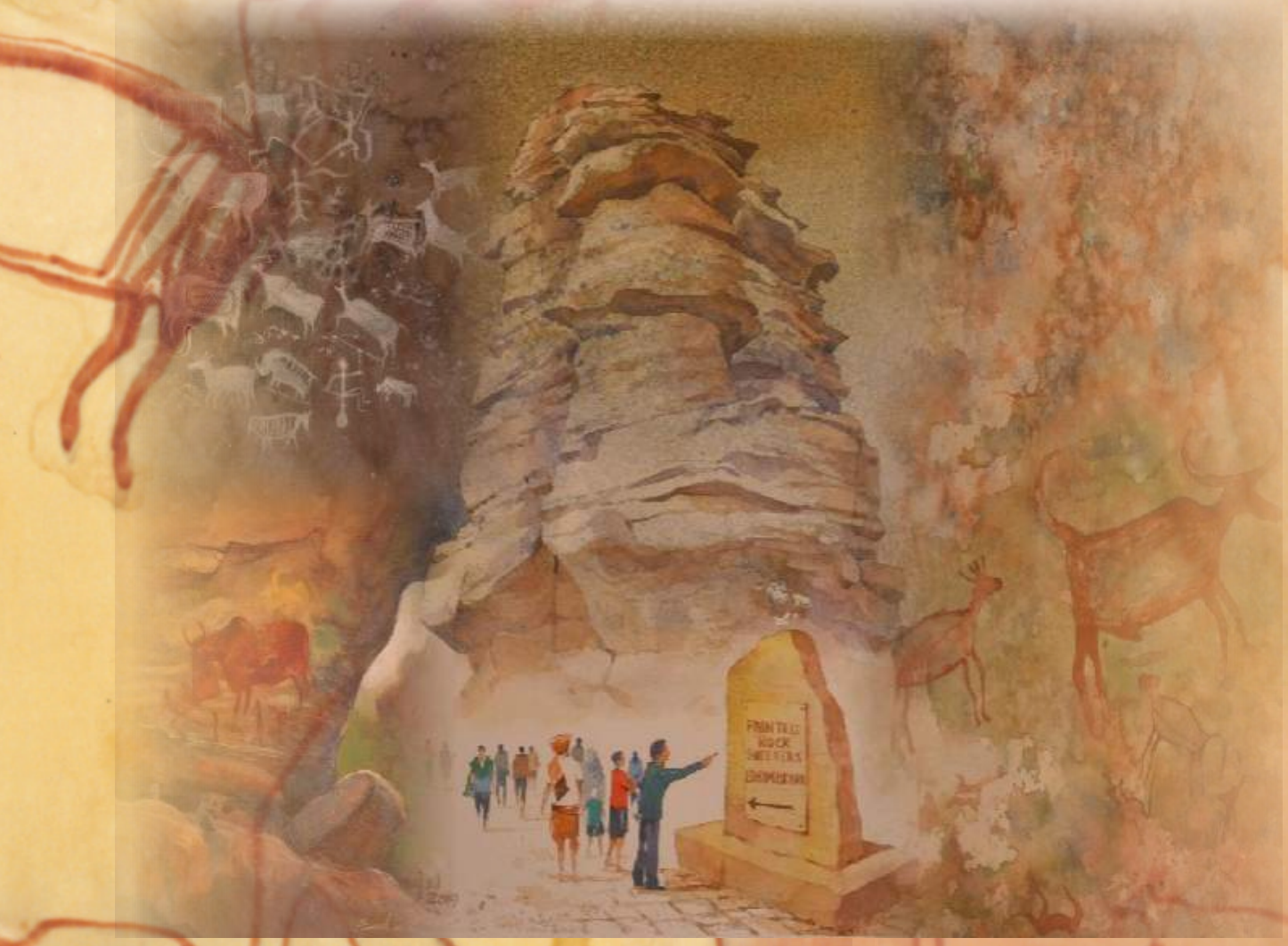

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

आदि दृश्य विभाग

ग्लोरियस भीमबेठकाः पद्मश्री डॉ. यशोधर मठपाल संग्रह

शैलकला मानव इतिहास के प्राचीनतम धरोहर में से एक हैं। भारत इस क्षेत्र में अत्यन्त समृद्ध हैं, मुख्यतः मध्य भारत का क्षेत्र। भारत का एकमात्र प्रागैतिहासिक पुरास्थल है, भीमबेठका जिसे यूनेस्को द्वारा वर्ष 2003 में विश्वधरोहर स्थल की सूची में सम्मिलित किया जा चुका है। भीमबेठका पुरास्थल के शैलचित्रों पर आधारित चलायमान प्रदर्शनी **"ग्लोरियस भीमबेटकाः पद्मश्री डॉ. यशोधर मठपाल संग्रह"** का आयोजन आदि दृश्य विभाग, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली एवं प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्त्व विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वाधान में विभागीय संग्राहालय, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्त्व विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय में आयोजित है।

भीमबेटका पुरास्थल मध्यप्रदेश के रायसेन जिले में अवस्थित है, यह शैलकला पुरास्थल भोपाल से लगभग 45 किलोमीटर दक्षिण में विंध्य पहाड़ियों के श्रृंखला में स्थित है। इसकी खोज प्रख्यात भारतीय शैलकला विशेषज्ञ पद्मश्री डॉ. वी. एस. वाकणकर ने वर्ष 1957 में की थी। तब से अभी तक 750 से अधिक शैलाश्रयों की पहचान की गयी है, जिनमें से 243 चित्रित शैलाश्रय भीमबेटका समूह में चिन्हित किये गए हैं।

भीमबेटका पुरास्थल शैलचित्रों की विविधता के कारण अनेक शोधार्थियों एंव पुरावेत्ताओं के लिए अध्ययन का विषय बना रहा। इसी क्रम में पद्मश्री सम्मानित डॉ. यशोधर मठपाल द्वारा भीमबेटका के प्रागैतिहासिक चित्रों को शोधाध्ययन का विषय बनाया गया। डॉ. मठपाल नें भीमबेटका पुरास्थल पर रहकर शैलाश्रयों में चित्रित शैलचित्रों को अनुपात के आधार पर स्केल (माप) सहित ड्रांइग पेपर पर जलरंग के माध्यम से बनाया। कई वर्षों तक चले इस कार्य के दौरान डॉ. मठपाल ने सैकड़ों शैलचित्रों को पेपर पर उतारा। इनमें से भीमबेटका एवं उसके समीपवर्ती पुरास्थलों के शैलचित्रों से संबंधित 374 पेंटिग्स को डॉ. मठपाल द्वारा इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सांस्कृतिक अभिलेखागार को प्रदान किया गया था। इस संग्रह से 32 पेंन्टिग का लखनऊ विश्वविद्यालय में प्रदर्शन किया गया है।

प्रर्दशनी का उद्घाटन दिनांक 12 मार्च, 2024 को प्रो. आलोक कुमार राय, कुलपति, लखनऊ विश्वविद्यालय के कर कमलो द्वारा किया गया। इस अवसर पर आदि दृश्य विभाग, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के विभागाध्यक्ष डॉ. रमाकर पंत, सहायक प्राध्यापक डॉ. दिलीप कुमार संत, परियोजना सहायक मो0 ज़ाकिर खान एवं लखनऊ

विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास एंव पुरातत्त्व विभाग के प्रो. अनिल कुमार (विभागाध्यक्ष), प्रो. पीयूष भार्गव, प्रो. प्रशांत श्रीवास्तव, प्रो. उमेश सिंह, सहायक प्राध्यापक आनन्द पाण्डेय, गरिमा भारती, रश्मि सिंह एवं अन्य विभागों के प्रोफेसर व अधिकारीगण के साथ–साथ एमेरिटस प्रो. विभा त्रिपाठी, डॉ. एस. बी. ओटा, डॉ. राजीव जायसवाल, व भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण लखनऊ सर्कल से डॉ. राजेश कन्नौजिया उपस्थित रहे।

प्रो. आलोक कुमार राय, कुलपति (लखनऊ विश्वविद्यालय) प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए

डॉ. दिलीप कुमार संत प्रदर्शनी का परिचय कराते हुए जिसमें कुलपति लखनऊ विश्वविद्यालय एवं अन्य शिक्षकगण व अधिकारीगण

इसी क्रम में दिनांक 12 मार्च, 2024 को क्षेत्रीय पुरातत्त्व विषय पर विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन लखनऊ विश्वविद्यालय के ए. पी. सेन सभागार में किया गया। कार्यक्रम का संचालन प्राचीन इतिहास एवं पुरातत्त्व विभाग के प्रो. पीयूष भार्गव द्वारा किया गया। उक्त कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष, प्रो. अनिल कुमार द्वारा डॉ. रमाकर पंत, विभागाध्यक्ष आदि दृश्य विभाग, एमेरिटस प्रो. विभा त्रिपाठी, प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणासी, डॉ. एस. बी ओटा, सेवानिवृत्त संयुक्त महानिदेशक, भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली, प्रो. के. के. थपल्याल, सेवानिवृत्त प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्त्व, लखनऊ विश्वविद्यालय का स्वागत किया।

मंच का संचालन करते प्रो. पीयूष भार्गव

स्वागत उपंरात डॉ. रमाकर पंत द्वारा इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एवं आदि दृश्य विभाग के उद्देश्य एवं निरंतर किये जा रहे कार्यों के विषय में प्रकाश डाला गया। साथ ही शैलकला के विभिन्न स्तरों पर अध्ययन की आवश्यता पर बल दिया। डॉ. पंत ने कहा यदि इस विषय पर गंभीरता से कार्य किया जाए तो यह मानव संस्कृति एवं सभ्यता को समझने में एक नयी दिशा प्रस्तुत करेगा।

डॉ. रमाकर पंत द्वारा उद्बोधन प्रस्तुत

इसके पश्चात् प्रो. विभा त्रिपाठी, द्वारा ***रिसेन्ट इश्यू इन आर्कियॉलाजी आफ द गंगा प्लेन*** विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। व्याख्यान में लखनऊ विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्त्व विभाग के छात्र, छात्राएं, शोधार्थी एवं शिक्षकगण उपस्थित रहे। प्रो. त्रिपाठी ने गंगा घाटी में प्रागैतिहास काल से लेकर 12वीं शताब्दी तक के पुरातात्त्विक शोध कार्यो पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला, साथ ही इस विषय में हो रहे अन्य वैज्ञानिक पद्धतियों की भी समीक्षा की।

प्रो. विभा त्रिपाठी द्वारा व्याख्यान प्रस्तुती एंव व उपस्थित अतिथिगण व विद्यार्थी

प्रो. के के. थपल्याल का उदबोधन

कार्यक्रम के अगली कड़ी में प्रो. के. के. थपल्याल का अध्यक्षीय उद्‌बोधन के लिए आंमत्रित किया गया जिसमें प्रो. थपल्याल ने आदि दृश्य अनुभाग के द्वारा आयोजित प्रर्दशनी व व्याख्यान के सफल आयोजन हेतु प्रसन्नता व्यक्त की। कार्यक्रम के अंत में प्रो. अनिल कुमार ने धन्यवाद ज्ञापन के तहत इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एवं आदि दृश्य विभाग के प्रति आभार प्रकट किया एवं सभागार में उपस्थित छात्र/छात्राओं/शोधार्थियों व प्राध्यापकों को प्रदर्शनी अवलोकन हेतु आंमत्रित किया।

प्रो. अनिल कुमार द्वारा धन्यवाद ज्ञापन

भीमबेठका की शैलकला पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए डॉ. एस. बी. ओटा

दिनांक 13 मार्च, 2024 को द्वितीय विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया। डॉ. एस. बी. ओटा द्वारा ***पेन्टेड रॉक शेल्टरस ऑफ भीमबेठका एंड इट्स मेनेजमेंट*** विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किए। डॉ. ओटा ने भीमबेठका के शैलकला को रेखाकिंत करते हुए प्रागैतिहास काल से गुप्त काल तक के मानव इतिहास में इस क्षेत्र में प्राप्त हो रहे पुरातात्त्विक अवशेषों को भी व्याख्यान में समाहित किया। व्याख्यान के उपरांत सभागार में

उपस्थित छात्र–छात्राओं एवं शोधार्थियों के विभिन्न प्रश्नों के उत्तर डॉ. ओटा ने स्पष्टता से दिए। प्रस्तुत व्याख्यान में डॉ. ओटा द्वारा विद्यार्थियों को शैलकला विषय समझाने व इस क्षेत्र में शोध हेतु प्रेरित किया।

डॉ. एस. बी. ओटा व्याख्यान प्रस्तुत एवं सभागार में उपस्थित विद्यार्थि व शिक्षकगण

प्रश्न पूछते हुए विद्यार्थी

प्रश्न पूछते हुए विद्यार्थी

प्रदर्शनी एंव विशिष्ट व्याख्यान के सफल आयोजन के पश्चात् लखनऊ विश्वविद्यालय एवं इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के मध्य आगामी विभिन्न अकादमिक कार्यों को लेकर दोनों संस्थानों के मध्य सामान्य समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया। लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय एवं इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र से आदि दृश्य विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. रमाकर पंत ने सामान्य समझौता ज्ञापन पर अपनी–अपनी संस्थाओं की ओर से क्रमशः हस्ताक्षर किये।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एवं लखनऊ विश्वविद्यालय के मध्य सामान्य समझौता ज्ञापन क्रमशः बायें से दाँये प्रो. पीयूष भार्गव, डॉ. दिलीप कुमार संत, प्रो. अनिल कुमार, डॉ. रमाकर पंत, प्रो. आलोक कुमार राय

मो. ज़ाकिर खान
परियोजना सहायक
आदि दृश्य विभाग